

श्रीमहर्षिर परमात्माने नमः

जैनप्रातःस्मरण

शास्त्रोद्धारक बाल ब्रह्मचारो

श्रीअमोलक ऋषिजी

महाराज के सद्बोध से

प्रसिद्ध कर्ता

भडना, (धुलिया) निवासी

पिताश्री चुनिलालजी स्मरणार्थम्

किसनलाल बोर्रा

(समर्थ छापखाना, धुलै.)

ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય

[ગુજરાતી કૉપીરાયિટ વિભાગ]

અનુક્રમાંક

૧૫૮૭૭

વર્ગિક

પુસ્તકનું નામ

બેન પ્રાત: ૨૫૨૫

વિષય પૃષ્ઠ: ૪

श्रीमहावीर परमात्मा ने नमः

जैन प्रातःस्मरण

शास्त्रोद्धारक बाल ब्रह्मचारी

श्रीअमोलक ऋषिजी

महाराज के सद्बोध से

स्वधर्मी भाइयों के नित्य पठन करने

प्रसिद्ध कर्ता

भडना, (धुलिया) निवासी

स्वर्गस्थ पितार्थी

चुनिलालजी बोराके स्मरणार्थ

किसनलाल बोरा

प्रत ५००] मूल्य नित्य पाठ [सं. १९८८

प्रस्तावना.



सर्वकार्य की आदि में मङ्गल मनाना यह परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है. इस से सिद्ध होता है कि—आदि में मङ्गल मनाने से उस काम के अन्तः तक मङ्गल ही रहता है. तो इसलिए सुखार्थी प्राणीयों को दिन की आदि में अर्थात् प्रातः काल में मङ्गल अवश्यही मनना चाहिए, कि-जिस से सब दिन आनन्द में पूरा होवे. इस प्रथानुसार प्रत्येक मतावलम्बियों अपने २ धर्मानुसार प्रातःकालमें अपने देव गुरु और धर्मात्माओंके गुणानुवाद करके मङ्गल मनाते है. तदनुसार जैन

धर्मियों के लिए प्रातःकाल में मङ्गल मनाने और धर्म समाचरण करने यह छोटीसी पुस्तक “ जैन प्रातःस्मरण ” नाम की मेरे धर्म स्नेही धर्म बन्धुओंके करकमल में अर्पित करता हुआ विनंती करता हूं कि-- सदैव प्रातःकाल में इस पुस्तक का पूर्ण पठन कर, इसमें सूचित नियमों को धरण कर, भूतकाल के पापों को धोकर, वर्तमान काल में अपनी आत्मा को पवित्र बनाइए और भविष्य काल के पाप का निरुधन कर सुखी बनीयेजी.

हितेच्छु—किसनलाल बोरा

प्रसिद्ध कर्ता का जीवन वृत्तान्त.

महाराष्ट्र देश में तीर्थरूप मनाजती नाशिक जिल्हे के आम्बे गाम में ओसवाल-वंश भूपण श्रीमान सुरजमलजी बोरा की धर्म पत्नी पारवतीबाई से सम्वत् १९३९ में पुत्र की प्राप्ति हुई जिनका नाम ' चुनिलालजी ' स्थापन किया. सात वर्ष की शिशु वय में पिता सुरजमलजी का स्वर्ग वास हो गया. फिर दो वर्ष विद्या-भ्यास किया. बुद्धि निर्मल होने से. संसारिक व्यवहार चलाने जितनी कला प्राप्त कर मातेश्वरी को साथ ले मारवाड देशके जोधपूर जिल्हे में पालासनी गाम में

मातेश्वरी के माहेर घर को जाकर रहे. कर्म योग यहां १७ वर्ष की उम्र में मातेश्वरी का भी स्वर्गवास हो गया. आपकी वैपार कार्य में कौशल्यता होने से, वहां ही वीसलपूर वाले श्रीमान भीखमचन्दजी वेद-मुथा की छोटी पुत्री चंद्रकंवरबाई से लग्न सम्बन्ध हो गया. सम्वत् १९५३ में परमपूज्य महा प्रभाविक श्री जयमलजी महाराज की सम्प्रदायके पूज्य श्री कनकमलजी महाराज ठाणा ५ का चतुर्मास पालासनी होने से, आपने, उनके पास सम्यक्त्व धारण कर अपने गुरु बनाए और यथोचित सेवा भक्ति कर सामायिक पाठ आदि ज्ञान ग्रहण किया. सम्वत् १९६० के माघ शुक्ल

१३ को पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम किसनलाल दिया. और सं. १९६९ श्रावण शुक्ला ५ को पुत्री हुई जिसका नाम गीताबाई दिया. इस बाईका लग्न सम्बन्ध सं. १९८० का महा शुक्ला १३ को हातनूर ग्राम निवासी श्रीमान बीजराजजी खींसरा के साथ किया.

आप सम्वत् १९६१ के वैशाख में व्यापारार्थ खानदेश के सींदखेडा तालुके के 'खरदा' ग्राम में आए. व्यापार अच्छा चलने से यहां १२ वर्ष पर्यन्त रहे. फिर सं० १९७२ के वैशाख शुक्ला १३ को भडनाकू गाव में आ रहे. सं० १९७७ के चैतमें संगत भिलजाने शत्रुजय गिरनार की यात्रा की. सं० १९८० वैशाख शुक्ला ३ को पुत्र किसनलालजी का लग्न सम्बन्ध

हातेडगांव वाले श्रीमान भूरमलजी सांडे चा
 की जेष्ठ पुत्री जतन बाई के साथ किया.
 इस वक्त भी केशरीयानाथ कोकरडिया
 पार्श्वनाथ की यात्रा की और सं० १९८१
 का चातुर्मास शास्त्रोद्धारक बाल ब्रह्मचारी
 मुनी श्री अमोलक ऋषिजी महाराज ठाणा
 ५ का धुलिया शहर में था, वहां आपदर्श-
 नार्थ गए और संजोड ब्रह्मचर्य व्रत धारण
 किया (शीलव्रत स्कन्ध किया.) तैसेही
 हरी लीलो तरी का मार्यादाकी ६० हरी से
 अधिक खाना नहीं. सो भी एक दिन में
 पांच हरी से ज्यादा खाना नहीं. पांचों
 पर्वों और श्रावणमांस भाद्रपदेमास में
 बिलकूल हरी खाना नहीं. चौमासे के चारों
 महिने में रात्रिको चारों आहार भोगवना
 नहीं. द्रव्य ५०००० से अधिक

रखना नहीं. चारो दिशीमें ५००-५०० कोस से अधिक जाना नहीं. एक सामायिक सदैव करना, जिस दिन सामायिक नहीं बने उस दिन हरी खाना नहीं. धोवन पानी मिले वहांतक कच्चापानी पीना नहीं. स्नान में वस्त्र धोने में २ मणसे अधिक पानी वापरना नहीं. इस प्रमाणें प्रत्याख्यान किए. धर्मार्थ पुण्यार्थ द्रव्य व्यय भी यथा शक्ति वक्तोवक्त अच्छा करते थे. और सं. १९८७ के चेतवदी ९ गुरुवार. ता० १२-३-३१ को दान धर्म व्रत प्रत्याख्यान कर अनित्य शरीर का परित्याग कर स्वर्गवासी बने.

इस वक्त आपके पुत्र किसनलालजी भी आपके प्रमानेही धर्मात्मा हैं. यथा शक्ति धर्माराधन नितपिालन करते हैं.

ले० गुणानुरागी-उत्तमचन्द सांढ

❀ जैन प्रातः स्मरण ❀



॥ श्रीसिद्ध भगवंत की स्तुति ॥

[हरीगीत छन्द]

॥ तुमे तरण तारण दुःख निवारण,
भविक जीव आराधनं; श्री नाभिनंदन
जगत वंदन, श्री आदिनाथ निरंजनं ॥ १ ॥
जगत भूषण विगत दूषण, प्रणव प्राणी
निरूपकं; ध्यान रूप अनूप उपमं, नमो
सिद्ध निरंजनं ॥ २ ॥ गगन मंगल मुक्ति
पद्मं, सर्व ऊर्ध्व निवासिनं; ज्ञान ज्योति
अनंत राजे, नमोऽ ॥ ३ ॥ अज्ञान निद्रा
विगत वेदन, दलित मोह निरायुकं; नाम
गोत्र न अंतरायं, नमोऽ ॥ ४ ॥ विकट
क्रोधा मान योधा, माया लोभ विसर्जतं;

२ नित्य नियमरी पंथी

राग द्वेप विमुद्रित अंकूर, नमोण ॥ ५ ॥

विमल केवल ज्ञान लोचन, ध्यान शुक्ल
समीरितं; योगिनामति गम्य रूपं, नमोण॥६॥

योग्य मुद्रा समोसरण मुद्रा पूरी पल्यकासन-
सर्व दीशि तेज रूपं, नमोण ॥ ७ ॥ स्व

समय समकितदृष्टि जिनकी, सोहि योग
अयोगिकं; देशनामां लीन होवे, नमोण॥८॥

जगत जनके दास दासी, तास आस
निरासनं; चंदपें परमानंद रूपे, नमोण॥९॥

चंद्र सूर्य दीप मणिकी, ज्योतिये न उलं-
घितं; ते ज्योति थी कोई अपर ज्योति, नमोण

॥ १० ॥ सिद्ध तीर्थ अतीर्थ सिद्धा, भेद
पंच दशाधिकं; सर्व कर्म विमुक्त चैतन,

नमोण ॥ ११ ॥ एकमांहि अनेक राजे,
अनेकमांही एकिकं; एक अनेककी नांहि

श्री सिद्ध भगवंतरो स्तुति ३

संख्या, नमोऽ ॥१२॥ अजर अमर अलख
अनंत, निराकार निरंजन; परिव्रज्य ज्ञान
अनंत लोचन, नमोऽ ॥१३॥ अतुल सुखकी
लेहेरमें प्रभु; लीन रहे निरंतर; धर्मध्यानथी
सिद्ध दर्शन, नमोऽ ॥१४॥ ध्यान धूप मनो
पुष्प, पंचेंद्रिय हुताशन; क्षमा जाप संतोष
पूजा, पूजो देव निरंजन; नमो सिद्ध निरंजन
॥ इति ॥१५॥

॥अथ श्री नवकार मंत्र.॥

पाठ.

अर्थ.

- १ नमो अरिहंताणं-कर्मरूपी वैरीने जित्या
छे तेमने नमस्कार होजो.
- २ नमो सिद्धाणं-सकल कार्य सिद्ध कार्य
छे तेमने नमस्कार होजो.

४ नित्य नियमरी पोथी

३ नमो आयरियाणं-छत्रसि गुणे करी सहित
एवा आचारजने नमस्कार होजो.

४ नमो उवज्झायाणं-पच्चीस गुणें करी
सहित, भणे ने भणावे
एवा जे उपाध्यायजी
तेमने नमस्कार होजो.

५ नमो लोए } लोकने विपे, जघन्य
सव्वसाहूणं } वेहजार क्रोड साधु,

उत्कृष्टा नव हजार क्रोड
साधु, ते सर्वने नमस्कार हो जो.

पंच परमेष्ठिनी स्तुति.

बार गुण अरिहंतदेव, प्रणमी जे भावे;
सिद्ध आठ गुण समरतां, ईश्वर दोहग जावे.
आचारज गुण छत्रांश, पच्चीश उवज्झाय;

श्री सिद्ध भगवंतरो स्तुति ६

सत्तावीश गुण साधुनां, जपतां सुख थायः
अष्टोत्तर पट गुण मली, समरो श्री नवकार;
धिरविमल पंडित तणो, नय प्रणमे नित्यसार.

आ अनानुपूर्व्विगणवारीसमजण.

ज्यां १ छे ते-नमो अरिहंताणं जाणवुं.

ज्यां २ छे ते-नमो सिद्धाणं जाणवुं.

ज्यां ३ छे ते-नमो आयरियाणं जाणवुं.

ज्यां ४ छे ते-नमो उवज्झायाणं जाणवुं.

ज्यां ५ छे ते-नमो लोए सव्वसाहूणं जाणवुं.

ए रीते उलट पालट (आवला सवला)

आंकडा आवे तेने ऊपरनी समजण प्रमाणे

चित्त स्थिर राखीने गणवा.

६ ।नित्य नियमरी पोथी

१ | २ | ३ | ४ | ५

१ | २ | ३ | ५ | ४

१ | २ | ४ | ३ | ५

१ | २ | ४ | ५ | ३

१ | २ | ५ | ३ | ४

१ | २ | ५ | ४ | ३

१	३	२	४	५
१	३	२	५	४
१	३	४	२	५
१	३	४	५	२
१	३	५	२	४
१	३	५	४	२

८ नित्य नियमरी पोथी

१	४	२	३	५
१	४	२	५	३
१	४	३	२	५
१	४	३	५	२
१	४	५	२	३
१	४	५	३	२

१	५	२	३	४
१	५	२	४	३
१	५	३	२	४
१	५	३	४	२
१	५	४	२	३
१	५	४	३	२

२	१	३	४	५
---	---	---	---	---

२	१	३	५	४
---	---	---	---	---

२	१	४	३	५
---	---	---	---	---

२	१	४	५	३
---	---	---	---	---

२	१	५	३	४
---	---	---	---	---

२	१	५	४	३
---	---	---	---	---

२ | ३ | १ | ४ | ५

२ | ३ | १ | ५ | ४

२ | ३ | ४ | १ | ५

२ | ३ | ४ | ५ | १

२ | ३ | ५ | १ | ४

२ | ३ | ५ | ४ | १

२ | ४ | १ | ३ | ५

२ | ४ | १ | ५ | ३

२ | ४ | ३ | १ | ५

२ | ४ | ३ | ५ | १

२ | ४ | ५ | १ | ३

२ | ४ | ५ | ३ | १

२ | ५ | १ | ३ | ४

२ | ५ | १ | ४ | ३

२ | ५ | ३ | १ | ४

२ | ५ | ३ | ४ | १

२ | ५ | ४ | १ | ३

२ | ५ | ४ | ३ | १

૩	૧	૨	૪	૫
---	---	---	---	---

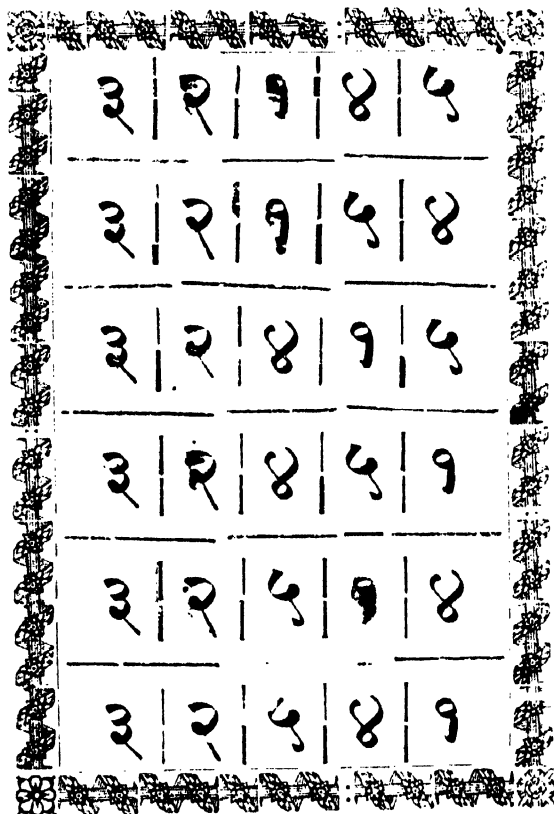
૩	૧	૨	૫	૪
---	---	---	---	---

૩	૧	૪	૨	૫
---	---	---	---	---

૩	૧	૪	૫	૨
---	---	---	---	---

૩	૧	૫	૨	૪
---	---	---	---	---

૩	૧	૫	૪	૨
---	---	---	---	---



३ | ४ | १ | २ | ५

२ | ४ | १ | ५ | ३

३ | ४ | २ | १ | ५

३ | ४ | २ | ५ | १

३ | ४ | ५ | १ | २

३ | ४ | ५ | २ | १

३ | ५ | १ | २ | ४

३ | ५ | १ | ४ | २

३ | ५ | २ | १ | ४

३ | ५ | २ | ४ | १

३ | ५ | ४ | १ | २

३ | ५ | ४ | २ | १

४	१	२	३	५
---	---	---	---	---

४	१	२	५	३
---	---	---	---	---

४	१	३	२	५
---	---	---	---	---

४	१	३	५	२
---	---	---	---	---

४	१	५	२	३
---	---	---	---	---

४	१	५	३	२
---	---	---	---	---

४ | २ | १ | ३ | ५

४ | २ | १ | ५ | ३

४ | २ | ३ | १ | ५

४ | २ | ३ | ५ | १

४ | २ | ५ | १ | ३

४ | २ | ५ | ३ | १

४ | ३ | १ | २ | ५

४ | ३ | १ | ५ | २

४ | ३ | २ | १ | ५

४ | ३ | २ | ५ | १

४ | ३ | ५ | १ | २

४ | ३ | ५ | २ | १

४ | ५ | १ | २ | ३

४ | ५ | १ | ३ | २

४ | ५ | २ | १ | ३

४ | ५ | २ | ३ | १

४ | ५ | ३ | १ | २

४ | ५ | ३ | २ | १

५ | १ | २ | ३ | ४

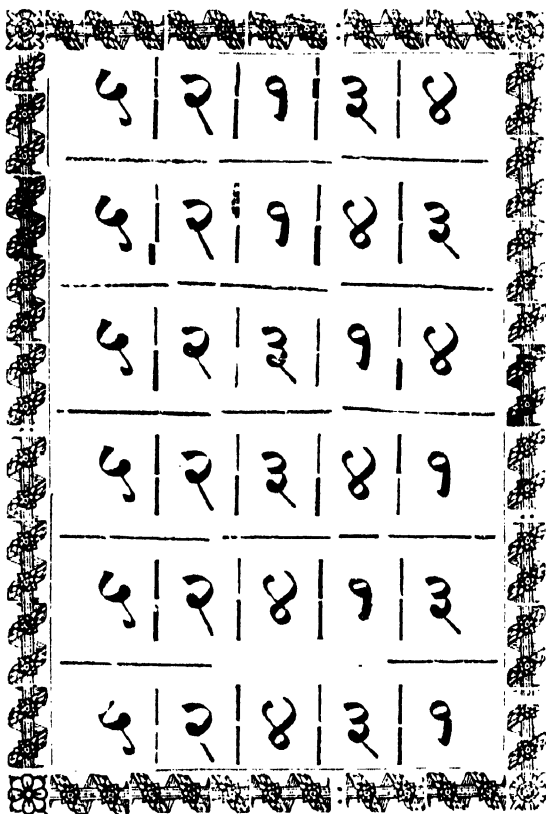
५ | १ | २ | ४ | ३

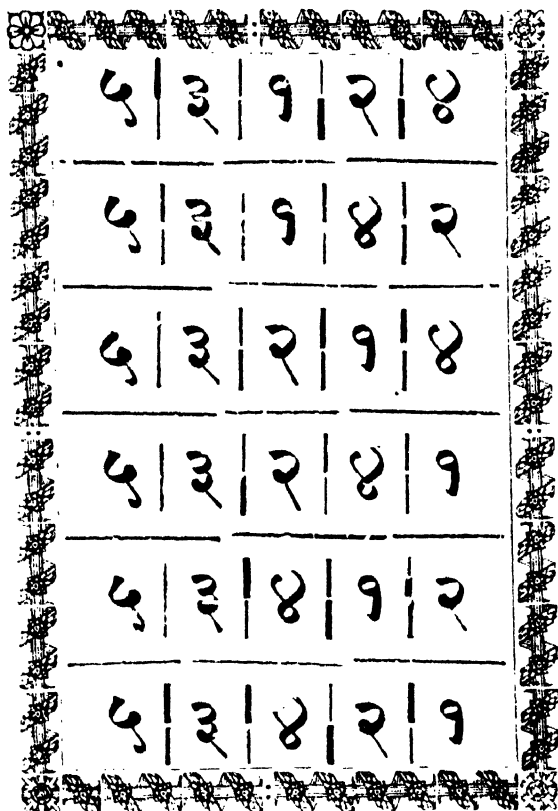
५ | १ | ३ | २ | ४

५ | १ | ३ | ४ | २

५ | १ | ४ | २ | ३

५ | १ | ४ | ३ | २





५	४	१	२	३
५	४	१	३	२
५	४	२	१	३
५	४	२	३	१
५	४	३	१	२
५	४	३	२	१

नवकार गिणनेका फल छप्पयछन्द

नित्य गिणे नवकार, सुख संपदा ते पामे;
 नित्य गिणे नवकार, दुःख दार्लीद्र ते वामे;
 नित्य गिणे नवकार, यश महिमा जग वाधे;
 नित्य गिणे नवकार, सुरगति ते साधे;
 नित्यनवकार गणनारने, आफत कदी नहीं आवे;
 बाला छगन इम कहे, ते मोक्ष पावे सही ॥१॥

॥ दूसरा छप्पय छन्द ॥

मंत्र खरो नवकार, तंत्र तेतो पण खोटुं,
 मंत्र खरो नवकार, वशीकरण जापज मोटुं,
 मंत्र खरो नवकार, धार्यू काम सिद्ध करावे,
 मंत्र खरो नवकार, मनोरथ सफल फलवे,
 मंत्र खरा नवकारने, ते आगल बीजो को नहीं,
 बालाछग न एम कहे, श्रेष्ठ मंत्र नवकार सही ॥२॥

॥ अथ चोवीस जिनस्तवन प्रारंभ ॥

(राग प्रभाती.)

॥प्रात उठी चोवीस जिनवरको, समरन
कीजे भाव धरी ॥प्राण ॥रिषभ अजित
संभव अभिनंदन, सुमती कुमती सब दूर हरी
॥ पद्म सुपास चंद्रा प्रभु ध्यावो, पुष्पदंत
हृण्या कर्म अरि ॥ प्राण ॥१॥ शतिल जिन
श्रेयांस वासुपूज्य, विमल विमल बुद्धि देत
खरी ॥ अनंत धर्म श्री शांती जिनेश्वर,
हरियो रोग असाद्य मरी ॥ प्राण ॥२॥ कुथुं
अर महि मुनिसुव्रतजी, नमी नेमि शिव रमणी
वरी ॥ पारश्वनाथ वर्धमान जिनेश्वर, केवल
लह्यो भव औघ तरी ॥ प्राण ॥३॥ तुम सम

२८ ।नित्य नियमरी पोथी

नहिं कोइ तारक देजा, इम निश्चय मनमांहे
धरी ॥ तिलोकं ऋषि कहे जिमतिम करिने,
मुक्तिश्री दोप्रभु मेहरकरी ॥ प्राण ॥४॥

॥ चोवीश तीर्थकर के नाम ॥

- १ श्री ऋषभदेवस्वामी.
- २ श्री अजितनाथस्वामी.
- ३ श्री संभवनाथस्वामी.
- ४ श्री अभिनंदनस्वामी.
- ५ श्री सुमतिनाथस्वामी.
- ६ श्री पद्मप्रभस्वामी.
- ७ श्री सुपार्श्वनाथस्वामी.
- ८ श्री चंद्रप्रभस्वामी.
- ९ श्री सुविधिनाथस्वामी.

चोवीस तर्थिकरनां नाम २९

- १० श्री शीतलनाथस्वामी.
- ११ श्री श्रेयांसनाथस्वामी.
- १२ श्री वासुपूज्यस्वामी
- १३ श्री विमलनाथस्वामी.
- १४ श्री अनंतनाथस्वामी.
- १५ श्री धर्मनाथस्वामी.
- १६ श्री शांतिनाथस्वामी.
- १७ श्री कुंथुनाथस्वामी.
- १८ श्री अरनाथस्वामी.
- १९ श्री महिनाथस्वामी.
- २० श्री मुनिसुव्रतस्वामी.
- २१ श्री नमिनाथस्वामी.
- २२ श्री नेमिनाथस्वामी.
- २३ श्री पार्श्वनाथस्वामी.

२४ श्री महावीरस्वामी.

श्री महावीरस्वामी पहोंचे निर्वाण, गौतम-
स्वामी लिया केवलज्ञान; ए चोवीशी का लीजे
नाम, तो फले मन वांछित काम ॥१॥

॥चौदह नियम चिंतवनेकी विगत॥

गाथा.

सचिच्च दब्बं विगई,
वाण्ह तंबोळ वत्थ कुसुमेसु ॥
वाहण सयण विलेवण,
वंमं दिसी^१ न्होण भत्तेसु ॥१॥
पाठ. अर्थ

१ सचिच्च-माटी, पाणी, अग्नी, वनस्पती,

चौदा नियम चिंतववारी ३१

फल, फूल, छाल्य, काष्ठ, मूल, पत्र, बीज, त्वचा अने जो लीलो तरी छेद्याने दोघडी हुइ न होय ते, तथा अग्नि प्रमुख अनेरु शस्त्र लाग्युं न होय ते, इत्यादिक सचित्तनुं वजन धारवुं.

२ दब्ब—जे वस्तु मुखमां जूदा २ स्वादने अर्थे नांखवी, तेनी गणत्रीनो नियम, उदाहरण; दांतण, पाणी, रोटी तरकारी खावानी सब वस्तु विगेरेनी गणत्री धारवी.

३ विगई—दूध, दही, घी, गोल, तेल, तथा जे चीज कहडाइमां तलाय छें तेनी गणत्री धारवी.

४ वाणह—पगरखां अथवा जोडा तथा मोजा विगेरेनी गणत्री धारवी.

- ૫ તંબોલ—પાન, સોપારી ફલાયચી, લવિંગ, ચૂરણ, ગોલી इत्यादिक નું બજન ધારવું.
- ૬ વસ્ત્ર-વસ્ત્ર (રેશમી, સૂતરાડ, શણ તથા ऊनનાં) વિગેરેની ગણત્રી ધારવી.
- ૭ કુસુમેસુ—જે વસ્તુ નાકે સુંઘવમાં આવે તેના તોલનું પ્રમાણ કરવું ઉદાહરણ:-- છીકળી ઘૃત વિગેરેનો નિયમ કરવો.
- ૮ વાહણ--ચરતુ, ફરતુ, તરતુ, ઉદાહરણ:-- હાથી, ઘોડા, ગાડી, રથ, મોટર, સૈકલ, નાવ, વહાણ અને બોટ વિગેરેનો નિયમ કરવો.
- ૯ સયણ--સૂવાની સેજ્યા પાટ, કુરશી માચા, પલંગ, ગાદી, બિછોનાં વિગેરેની ગણત્રી ધારવી.

चौदा नियम चिंतववारी ३३

- १० विलेवण—जे वस्तु शरीरे चोपडवामां
आवे तेना वजननुं प्रमाण. उदाहरण:-
सूखड, चंदन केशर तेल विगेरे
- ११ बंभ—ब्रह्मचर्यनो नियम करवो.
- १२ दिसी—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण,
उंचु अने नीचुं, एछ दिशाए जवाना
कोसनुं प्रमाण धारवुं,
- १३ न्हाण—सर्व अंगे नहावु छोटु स्नान
हाथ पांव माथो धोवे मोटु स्नान--सब
शरीर धोवे तेनी गणत्री करवी.
- १४ भत्तेसु—जिमतां भोजन पाणी वापरयुं
तेना वजननुं प्रमाण करवुं.
- १५ पृथ्विकाय—निमक, खडी, हि रमची
विगेरे मट्टी वापरवाना वजननुं प्रमाण.

- ૧૬ અપ્કાય—ઠંડો તથા ઉનું પાણી પીવા
વાપરવા અને નહાવા વિગેરેના કામમાં
આવે તે સર્વેના વજનનું પ્રમાણ કરવું.
- ૧૭ તેડકાય—ચૂલા, દીવા સગ ડીયો
ચિલમ બિડી વિગેરે સલગાવવાની
ગણત્રીનું પ્રમાણ તથા તેનાં પ્રમાણમાં
રાંધેલું જમવાનો પળ નિયમ કરવો.
- ૧૮ વાડકાય—પંખાથી તથા લુગડાથી
પવન નાંખવો તથા ફૂંકવું તથા હીંચવું
તેનું પ્રમાણ કરવું.
- ૧૯ વનસ્પતીકાય—લીલોત્રી, ફલ શાક,
ભાજી વિગેરેની ગણત્રી અથવા તોલનું
પ્રમાણ કરવું.
- ૨૦ ત્રસકાય—બેદંદ્રીયથી તે પંચેદ્રીય સૂધીના
નિરઅપરાધી ત્રસ જીવોને કુબુદ્ધિ કરી

शीयलनी नववाडो . ३५

हणवा नही, ते विषेनो नियम करवो.

२१ असी—तरवार, बंदुक, छरी, छरा, चक्कू
सूई, कतरणी, सतोरा, घड़ी विगेरे
शस्त्र धारण करवानु प्रमाण करवुं.

२२ मसी—खडीया, द्वातो. कलमो विगेरे
रुशनाइना वासणनी गणत्री तथा वेपार
करवानो प्रमाण करवो.

२३ कृषी—जमीन खोदवानुं घर, क्षेत्र,
टांकां, भोंयरा, तलाव, वाव्य, कूवा
विगेरे खोदवोनां राचनुं प्रमाण तथा
ते वापरवानो प्रमाण करवुं.

—:०:—

अथ श्री शीयलनी नववाडो प्रारंभ

॥पहेले प्रणमुं गौतम पाय, पामी, सदगुरु
तणे पसाय; नव वाड शीतलनी धरो, जिम

३६ . जैन प्रातःस्मरणं

सासर सोहेलो तरो ॥१॥ पहेली वाड हवे
वस्ती भणी, गुरु पासे एसी में सुणी; ज्यां
स्त्री पशु पंडक नवि होय, एवो उपाश्रय
सेवे सोय ॥२॥ उंदर मंजरि रहे विश्वास,
रहेता पामे मरण विनाश ; तिम ब्रह्मचारी
नारी संग, रहेतां न रहें शीयल अखंड ॥३॥

बीजी वाडे स्त्रीनी कथा, शियलवंत नर
न करे तथा; विकथा पापतणुं छे मूल,
त्रिविधे त्रिविधे छंडो दूर ॥१॥ (जेम) लीबु
दीछे दाढज गले, (तेम) स्त्रीनीवाते शियलथी
चले; रुप शृंगार शोभावे वदन्न, बहु सरस
दीपावे मदन्न ॥२॥

त्रीजी वाड हवे शय्यभाणी, शयन पाटला
आसन तणी; ज्यां स्त्री बेछी प्रति रुप जाम
त्यां शियलवंत नकरे विश्राम ॥१॥ कणक

वाक जाय कहोले गंध, पछी केमे नवि
आवे बंध; तेम स्त्री आसन बेसे जेह, शियल
वाक जाये तस देह ॥२॥

चोथी वाड नयणे नयणशुं, इंद्रिये नवि
निरखे नेहशुं; जो निरखे तो भागे सही,
एह वात जिनराजे कही ॥१॥ सूर्य सामुं
बलि बलि जोय, चक्षु तेज हीण माणस
होय; जिम जिम निरखे स्त्रीनां अंग, तिम
तिम दीपे आधिको अनंग ॥२॥

पांचवी वाड हवे कूडांतरे, शियलवंत
रहेवुं नवि कोरे; ज्यां स्वर सूणवो कंकण
तणो, हाव भाव नारीनो घणो ॥१॥ अग्नि
पाखे कोइ मूके लाख, अंतरंग बलिने होय
राख; हास्य रुदन करतां सांभली, शियल
रंग जाये मन चली ॥२॥

હવે પૂર્વ ક્રિડા નવિ સંભારીએ, સદાય
 છઘ્ઘી ઇમ પાલીયે; સંકલ્પ વિકલ્પ નવિ
 કરવા કિમે, તે સંસાર માંહે નવિ ભમે ॥૧॥
 ભારી અગ્નિ ઉપર તત્કાલ, પૂલો મૂકે ઉઠે
 જ્ઞાલ; તેમ જાધું પીધું હશ્યું રમ્યુ, સંભાલિયે
 તો શિયલજ વમ્યુ ॥૨॥

સાતમી વાડ હવે હિયે ધરો, વિગય લેવાની
 અત્પજ કરો; સરસ અહારે ઉપજે કામ,
 (અને) મોક્ષતણો તે હોય વિરામ ॥૧॥
 સન્નિપાતિયાને જિમ ઘૃત પાય, તેમ સન્નિપાત
 અધિકો થાય; તેમ બ્રહ્મચારી સરંશુ જમે,
 તો સુતે સ્વપ્ને શિયલજ વમે ॥૨॥

આઠમી વાડ અતિમાત્રે આહાર, કરે તો
 નિદ્રા આવે આપાર; નિદ્રામાં વિકલ્પ ના કરે,

शीयल वाड थकी लडथडे ॥ १ ॥ शेरनी
हांडलीमां बशेर खीचडी, सीझंता फाटे
तोलडी; तिम ब्रह्मचारी आहरा, अतिमात्रे
विणसे शीयलने भांजे गात्रे ॥१॥

चूवा चंदन अगर कपूर, शरीर श्रुशुषा
परवल पूर; वेड मुद्रडी वेस सफार, शीयलंवत
नवि करें शृंगार ॥१॥ दरिद्रीने जेम जडयुं
रतन, धूए पखाले न करे जतन; जण
जणने देखाडी जाय; उलाली ने लीधुं राय ॥२॥
तिम ब्रह्मचारी देहने धोय, स्त्री देखने वहा-
लो होय; जिमदेखे तिम करे अभिलाष,
कुल खंपण लजावे लाज ॥३॥ अणसण
उणोदरी तप बहू करो, सुधुं शीयल हँड
धरो; मुखना मूको सरवे स्वाद, ज्ञान गीतनी

सुणवो नाद ॥४॥ एकली खी एकलीशुं
 वात, नवि जावुं न करवो संगाय; दोय
 पुरुष सूए एकंत, सूता न रहे शीयल
 अखंड ॥५॥ छ वर्ष ने हूआ छमास, पिता
 न पोढे पुत्रिनी पास; सात वरसनो बेढो
 थाय, तस पासे नवि पोढे माय ॥६॥ सघला
 जिननी एहज साख, इंद्रिय बेल्या नवलाख,
 पचेंन्द्रिय नवलाख प्रमाण, मनुष्य असंख्य
 समूछिम जाण ॥७॥ एटली हिंसा भोगे करे,
 पापे पेट सदाये भरे दानमांहि वडुं अभयदान
 व्रतमांहि भलुं शीयल प्रधान ॥८॥ अग्निज्वाल
 पीतां सोह्यली, तेम ब्रह्मचर्य धरतां दोह्यलुं;
 समी पेरे समुद्र तरतां सोह्यलो, शीयल
 व्रत धरतां दोह्यलुं ॥९॥ तरुण वयमां

शीयलनुं चोढालियुं ४१

तरुणी जे तजे, तेहनी सेवा सुर नर भजे;
भजे भजे मुनिवर भावघणे, शीयलवंतने जउ
भामणे ॥१०॥ नववाडशुं शीयल पालशे,
अंते भवना फेरा टालशे ॥

इतिश्री नववाडो समाप्त.

॥ अथ श्री शीयलनुं चोढालियुं ॥

॥ ढाल १ ली. ॥

॥ चोवशि जिने आगमेरे, भांख्यो शीयल
निधान; ब्रह्मचारी भगवंत समेरे, एम बोले
वर्द्धमान; सुगुण नर सेवो शीयल निधान
॥ १ ॥ शियल समो जगको नहीं रे,
शिवल मले सवि थोक; तप जप कीरिया जे
कोरे रे, शियल विना सबे फोक ॥ सुगुण
० ॥ २ ॥ देव दानव सुर पाय नमे रे,

उत्तराध्ययन नीं साख; शीयले सुर पदवी
 लहेरे, श्रीजिन आगम भाख ॥ सुगुण० ॥ ३ ॥
 रोक्यां ते दुरगति वारणां रे, भांख्यो
 संवरद्वार; छ मासी तप फल कहुंरे, महा-
 निशीथ मोझार ॥ सुगुण० ॥ ४ ॥ देखे
 सतिजनिने कारणे रे, पावक शीतल कीध;
 द्रौपदी संकट सबि टल्यांरे, नेभिराजुल जस
 लीघ ॥ सुगुण० ॥ ५ ॥ इति.

॥ ढाल २ जी ॥

॥ हारे लाला समकित सखी एम विनवे,
 तमे सेवो शियलनिधान ॥ रे लाला ॥ ईह
 लोके सुख संपदा, परलोके देव विमान ॥
 रे लाला ॥ शियल सुरंगा मानवी; तमे
 राखो शियलशुं रंग ॥ रे लाला । शियल०
 ॥ १ ॥ हारे लाला क्षण एक सूखने का-

रणे, असंख्याता समूर्द्धिमजंत ॥ रे लाल
 पंचम अंगे हिंसा कही, ते केम करे मति
 वंत ॥ रे लाला, शियल० ॥ २ ॥ हारे
 लाला नवलाख गर्भावासना, तेने कोण
 विदारे मूढ ॥ रे लाला ते समो पापी
 बीजो नहीं, सेवे मैथुनने मलमूत्र ॥ रे
 लाला शियल० ॥ ३ ॥ हारे लाला मूलते
 महाव्रत भाँगतां, वली बीजां भाँगशे चार ॥
 रे लाला मन संवरि करी राखीये, जेम
 नावे आश्रव द्वार; रे लाला शियल० ॥ ४ ॥
 हारे लाला मंत्र जंत्र मणि औषधी, वेद
 विद्याने सिद्धांते ॥ रे लाला शियल बिना
 शोभे नहि, यति जोगीने महंत, रे लाला
 शियल ॥ ५ ॥ इति. ॥

॥ ढाल ३ जी. ॥

॥ माय बहेनी बेटा बेटडी, धारिये शियल
 शृं प्रिति, सज्जनि मोरी रे, अंतर कपट न
 राखीये, राखीये निरमलुं चित्त, सज्जनि
 मोरी रे, अहो रे मानव भव दोहिलो ॥१॥
 निज घर आप संभारतां, भोलपणुं करे दूर,
 सज्जनिण आतम महेल मां पिउ वसे, पी
 जीये शिवरस पूर, सज्जनिण अहो रेण ॥२॥
 ज्ञान दीपक करी राखीये, निरुपम प्रीतम
 रूप, सज्जनिण पतिवृता गुण करी राखीये,
 ते लहे सुख अनूप, सज्जनिण अहोरेण ॥४॥
 शियल चिंतामाणि रयण स्यो, तप मांहि
 कनक जडाव, सज्जनिण । ज्ञान अंकुश करी
 राखीये, मनडुं माटुं मां डोलव, सज्जनिण

॥ ४ ॥ सातसे साहेली साथे लइ, समकित
सुत हुलराव; सज्जनिण ॥ निज्जरानो भारजी
था पीए, शिवरमणीशु मेलाप; सज्जनिण ॥
अहो रेण ॥५॥ इति.

॥ ढाल ४ थी. ॥

सुंदरी शीख सुणो मन रंगे, धरो शियल
सुखदाई रे; समकित साथे जो शियलज
धरीये, तो अविचल सूख ए वरीये रे; शियल
धरीजे बेहनी शियल पालीजे ॥ १ ॥ सोले
सतीयो शीयले सुख पामी, नव इंद्रिय वश
कीधी रे; शियल स्वभावे जगमां जस लीधो,
सू सतियो नाम शुद्ध कीधी रे; शियल ॥२॥
ज्ञान साथे कीरिया मन धरीये, एम
अविचल सूख वरीये रे; केवल ज्ञान तणुं सुख

पामे, शियले भव समुद्र तरीये रे; शियलण
 ॥ ३ ॥ एम सुणीने आभव परभव, सखियों
 कीजे ते भली कमाई रे; परनिंदा परिहरवा
 कीजे, सेवो शीयल सुखदाई रे; शियलण
 ॥ ४ ॥ एम सुणी कोइ शीयलज पाले, दुर-
 गति दुःख निवारे रे; मुनि जीवण कहे
 संपदा पावे, खंभात नगर गुण गावे रे;
 शियलण ॥ ५ ॥ इति शीयलनु चौढाल्यो ॥

॥ अथ श्रावक नीचे लखेला त्रण
 मनोरथने चिंतवतो थको महा
 मोटी निर्जरा करे, संसारनो
 अंत करे, ते लखिए छैए.

॥ १ ॥ तिहां पहेलो मनोरथ कहीएछीए.

શ્રાવકને ચિંતવના ત્રણ મનોરથ ૪૭

શ્રમણોપાસક શ્રાવક એમ ચિંતવે જે
કેવારે હું બાહ્ય તથા અભ્યંતર એવો આરંભ
અને પરિગ્રહ થોડો ને ઘણો, ન્હાનો અને
મહોટો, સચિત્ત, અચિત્ત, અને મિશ્ર,
હલહો ને ભારી, જે મહાપાપનું મૂલ,
દુર્ગતિને વધાવનારો, મહા કામ, ક્રોધ, માન,
માયા, લોભ, વિષય અને કપાયનો સ્વામી,
મહાદુઃખનું કારણ, મહાઅનર્થ કારી, મહા-
દુર્ગતિ નીશિલા, માઠીલશ્યા અધ્યવસાયનો
પરિણામી, મહાઅજ્ઞાન, મોહ, મત્સર, રાગ
અને દ્વેષનું મુલ, દશવિધ યતિધર્મ રૂપ કલ્પ-
વૃક્ષ તમુપવનનો દાવાનલ, જ્ઞાન, ક્રિયા,
ક્ષમા, દયા, સત્ય, સંતોષનો નાશ કરનારો
તથા બોધબીજરૂપ સમકિતનો નાશ કરનારો,

સંયમ વ્રત અને બ્રહ્મચર્યનો ઘાત કરનારો,
 મહાકુમતિ તથા કુબુદ્ધિ રૂપ દુઃખ દારિદ્રનો
 દેવાવાલો, સુમતિ, અંન સુબુદ્ધિ રૂપ સુખ
 સૌભાગ્યનો નાશ કરનારો, મહાતપ સંયમ રૂપ
 ધનને લૂટનારો, મહા લોભ ક્લેશ રૂપ સમુદ્રનો
 વધારનારો, મહા જન્મ, જરા અને મરણના
 ભયનો દેવાવાલો, મહા માયા ઇંટલે કપટનો
 મંડાર, મિથ્યાત્વ દર્શન રૂપ શત્રુ ભરેલો,
 મહા મોક્ષ માર્ગનો વિગ્રહકારી, મહા કડવા
 કર્મવિપાક ફાલનો દેવાવાલો, અનંત સંસારનો
 વધારનારો, મહાપાપી, પાંચ ઈન્દ્રિયના વિષય-
 રૂપ વૈરીની પૂષ્ટિનો કરનારો, મહોટી ચિંતા,
 શોક, ગારવ અને શ્વેદનો કરનારો, મહા
 સંસારરૂપ અગાધ વલ્લિનો સિંચવા વાલો,

શ્રાવકને ચિંતવવાના ત્રણ મનોરથ ૪૯

મહાકૂડ કપટનો આગાર, મહા બંધ પરમ
ક્લેશનો આગાર, મહોટા છેદનો કરાવનારો,
મહા મંદબુદ્ધિનો આદર્યો, ઉત્તમ પુરુષ સાધુ
નિગ્રંથોયે જેને નિંદ્યો છે, અને સર્વ લોકમાં
સર્વ જીવોને એના સરિખો બીજો કોઈ વિષમ
નથી, મોહરૂપ પાશનો પ્રતિબંધક, ઇહ લોક
તથા પરલોકના સુખનો નાશ કરનાર, મહા-
પાપી, પાંચ અશ્રવનો આગાર, મહા અનંત
દારુણ કર્કશ કઠોર અછતા એવા દુઃખ
અને ભયનો દેવવાલો, મહોટા સાવધ વ્યા-
પાર કુત્વાણિજ્ય કુકર્માદાનનો કરાવનારો,
મહા અધુવ, અનિત્ય, અશાશ્વતો, અસાર,
અત્રાણ, અશરણ, એવો જે આરંભ અને

પરિગ્રહ તેને હું કેવારે છાંડીશ જે દિવસ
છાંડીશ, તે દિવસ મહારો ધન્યછે ! એવી રીતે
પ્રથમ મનોરથ શ્રાવક કરે ॥ ૧ ॥

૨ હવે દુજા મનોરથમાં શ્રમણોપાસક
શ્રાવક એમ ચિંતવે જે કેવારે હું મુંડ થઈને
દશ પ્રકારે યતિધર્મ ધારી, નવવાઢે વિશુદ્ધ
બ્રહ્મચારી, સર્વ સાવધ પરિહારી અળગારના
સત્તાવીશ ગુણધારી, પાંચ સમિતિ ત્રણ
ગુપ્તિયે વિશુદ્ધવિહારી, મહોટા અભિગ્રહનો
ધારી, બેહેતાલીશ દોષ રહિત વિશુદ્ધ
આહારી, સત્તરભેદે સંયમધારી, બાર ભેદે
તપશ્યાકારી, અંત આહારી, પ્રાંત આહારી,
અરસ આહારિ, વિરસ આહારી, લુલ્લ્લ

શ્રાવકને ચિંતવવાના ત્રણ મનોરથ ૫૧

આહારી, તુચ્છ આહારી, અંતજીવી, પ્રાંતજીવી,
અરસજીવી, વિરસજીવી, લુલ્લુખજીવી, તુચ્છ
જીવી સર્વ રસ ત્યાગી, છુકાયનો દયાલ,
નિર્લોભી, નિઃસ્વાદી, કુક્ષી સંબલ, પંખી
તુલ્ય, વાયરાની પેરે અપ્રાનિબંધ વિહારી,
વૈતરાગની આજ્ઞાસહિત, એહવા ગુણોનો
ધારક, જે અળંગાર તે હું કેવોરે થઈશ ! જે
દિવસ હું પૂર્વોક્ત ગુણવાન સાધુ થઈશ ! તે
દિવસ ધન્ય છે ! એ રીતે ત્રીજો મનોરથ શ્રાવક
કરે ॥ ૨ ॥

૩ હવે ત્રીજો મનોરથમાં શ્રમણોપાસક
શ્રાવક એમ ચિંતવે જે કેવોરે હું સર્વ પાપ-
સ્થાનક આલોઈ, નિંદા નિશાન્ય થઈ સર્વ
જીવ રાશી ચ્ચમાવિને, સર્વ વ્રત સંભારીને,

અદાર પાપસ્થાનકથી ત્રિવિધે ત્રિવિધે કરી
 વોસરાવીને, ચારે આહાર પચ્ચલ્લવિને આ ઇદ્દં,
 કંતં, પીયં, માણુણં, મણામં, ધિજ્જં, વિસસિયં,
 સમયં, અણુમયં, વહુમયં, મંડકરંડગસમાણં,
 રયણ કરંડગભૂયં, માણંસિયા, માણંઉન્હા,
 માણં સુઆ, માણં પવાિસા, માણંબાલા, માણં
 ચોરા, માણંદસમસગા માણવાઇયં, પિત્તિયં,
 સમીમં સનિવાઇયં, વિવિહારોગાયંકા, પરિસહો-
 વસગા, ફાસા ફુસંતિ, એહવું મહારું શરીરેછે
 તેને છેહેલે શ્વાસોશ્વાસે વોસિરાવીને, ત્રણ
 આરાધના આરાધતો થકો, ચાર મંગલિકરુપ
 ચાર શરણ મુખે ઉચ્ચારતો થકો, સર્વ
 સંસારને પૂંઠ દેતો થકો, એક અરિહંત, ત્રીજા
 સિદ્ધ, ત્રીજા સાધુ અને ચોથે કેવલિ

શ્રાવકને ચિંતવવાના ત્રણ મનોરથ ૬૩

પ્રસ્થપિત દયાધર્મ, તેના ધ્યાનને ધ્યાવતો થકો, શરીરની મમતા રહિત થયો થકો પાદોપ ગમન સંચારા સહિત પંડિત મરણાના પાંચ અતિચાર ટાલતો થકો, મરણને અળવાંછતો થકો, એહવું પંડિત મરણ અંતકાલે મુજને હોજો, એ રીતે ત્રીજો મનોરથ શ્રાવક કરે ॥ ૩ ॥

એ ત્રણા મનોરથને શ્રમણોપાસક શ્રાવક, મન, વચન અને કાયાએ કરી શુદ્ધપણે ધ્યાવતો થકો પડિ જાગરણ માણે વિચરતો થકો સર્વ કર્મની નિર્જરા કરીને સંસારનો અંત કરે. મોક્ષરૂપ શાશ્વત સ્થાનક પ્રત્યે પામે ॥ इति ત્રણ મનોરથ સંપૂર્ણ ॥

॥ अथ श्री सुभद्रासतीनी सहाय ॥

॥ मुनिवर सोधे इरजा, जीवना जतन
करंत; तरणुं खूत्यु आंखमां, नयणे नरि
झरंत ॥ १ ॥ कल्पवृक्ष जणो ओलख्यो,
आंगणे ऊभोरे जेह; जीभे तरणुं काढीयो,
सासुने पड्यो संदेह ॥ २ ॥ ते सज्जन शुं
कीजीए, जेणे कुल लागे लाज; पुत्र बहु
सोना समी, नहीं अमारे काज ॥ ३ ॥
गुण विनासी गुण लोकमां, गुण विण नार
कुनार; मन भाग्युं भरतारनुं नहीं अमारे
धरवार ॥ ४ ॥ पिउ वचन श्रवणे सुणी,
सती मन चितवे एम; जिनधर्म कलंक
जाणी करी, काउसग कीधो रे तेम ॥ ५ ॥
इंद्र तणुं आसन चलयुं, सती शीर आव्युं रे

अथ श्री सुभद्रा सतिनी सहाय ५५

आलः पोल जडावुं नगरनी, तोरे उतरसे
गाल ॥६॥ भूंगलतो भांगे नहीं, घण न
लागे घाय॥चंपा पोल न उधडे, आकुल
व्याकुल थाय ॥७॥ आकाशे उभा देवता,
बोले एवा रे बोल; सती जल सींचे चालणी,
तो रे उघडंसे पोल ॥८॥ राजा मन आ-
णदियो, नगर घणी छे नार; अंतेउर छे
माहखं, सतिय शिरोमणि सार ॥९॥ अते
उर कीधुं एकठुं, कुवा कांठे नहीं माग;
काचे तांतणे चालणी, त्रुटी जाये त्राग ॥१०॥
अंतेउर थयुं दयामणुं, राजा थयो निराश;
मांडीपणुं मनमां रखं, धिकपड्यो घरवास
॥११॥ नगर पडो वगडावीयो, वस्ती दांसे
हेरान, प्रजाने पीडा घणी, कोइ दियो

जीवित दान ॥१२॥ पडो आध्यो घर
 आंगणे, नगरी हाल कालोल; जो माता
 अनुमत दीयो, तो हुं उघाडुं रे पोल
 ॥१३॥ बली बली बहुवर शुं कहूं, नहीं-
 निर्लजने लाज ॥ नवकुल नाग नाशी गया,
 आव्युं कांकिडे राज ॥१४॥ दोष ते दीजे
 कर्मने, कलंक चढाव्युं रे माय; पडो छबी
 उभी रही, जइ संभलाव्यो राय ॥१५॥
 वेगे ते गइ रे वधामणी, राजा नहीं विश्वास;
 प्रत्यक्ष जुंउए पारखुं, जइ करो तपास
 ॥१६॥ सुखासन बेसी करी आवी जिहां
 छे रे कूप; वदन ते पुनम चंदलो, देखी
 हख्यो भूप ॥१७॥ राजा मन अणंदियो,
 हिये हँस बहु थाय; प्रजाने पीडा घणी सार करो

अथ श्री सुभद्रा सतिनी सङ्गाय ५७

मोरी माय ॥ १८ ॥ अवर पुरुष बंधव पिता,
सति मनमांही सोय; मानव सहु मेडीये
चडी, सती जुए सउ कोय ॥ १९ ॥ काचे
तांतणे चालणी, सती कलां चढी सोल;
कामनी कूप जले भरी, ऊघाडी त्रण पोल
॥ २० ॥ कोइ पीयर कोइ सासरे, कोइ
होशे माने मोसाल; चौथी पोल ऊघाडसे,
जे होशे शियल चोसाल ॥ २१ ॥ चौथी पोल
उघाडशे, जे हशे शियल निकलंक; सुरनर
होजो साखिया, सुभद्राए टाल्युं कलंक
॥ २२ ॥ नाक रहुं नगरीतणुं, गाम
उतारी रे गाल, राय राणा प्रसंशा करे,
सतिय शिरोमणी सार ॥ २३ ॥ नर नारी जे
पालशे, ते तरशे रे संसार; सिद्धतणां सुख

पामशे, अमर तणो अवतार ॥२३॥संघो
 कहे शियले सती, महीलाये राख्युं रे नाम;
 वाघण कोरां दुधडां, रहेशे सोना केरे ठाम
 ॥ २५ ॥

[अथ श्रीमहाविद्देव श्रेष्ठनेविषेविद्यमान ।
 श्रीवीशविहरमानतीर्थकरनांनाम

- १ श्री सीमंधरस्वामी.
- २ श्री युगमंधरस्वामी.
- ३ श्री बाहुस्वामी.
- ४ श्री सुबाहुस्वामी.
- ५ श्री सुजातस्वामी.
- ६ श्री स्वयंप्रभस्वामी.
- ७ श्री ऋषभाननस्वामी.
- ८ श्री अनंतवीर्यस्वामी.

श्रीविशविहरमान् तीर्थकरना नाभ५९

- ९ श्री सुरप्रभस्वामी.
- १० श्री विशालप्रभस्वामी.
- ११ श्री वज्रंधरस्वामी.
- १२ श्री चंद्राननस्वामी.
- १३ श्री चंद्रबाहुस्वामी,
- १४ श्री भुजंगस्वामी.
- १५ श्री ईश्वरस्वामी.
- १६ श्री नेमिप्रभस्वामी.
- १७ श्री वीरसेनस्वामी.
- १८ श्री महाभद्रस्वामी.
- १९ श्री देवजस स्वामी.
- २० श्री अजितवीर्यस्वामी.



॥ अथ श्रीछाइस बोलरी धारणा, चिंतववारी विगत.

- १ उल्लणियाविहं—शरीर लुहवाना अंगूछानी गणत्री करवी.
- २ दंतणविहं—दातणनी गणत्री करवी.
- ३ फलविहं—वृक्ष विगेरेना फलनी गणत्री करवी.
- ४ अभ्मंगणविहं—तेल विगेरे शरीरने चोलवानी चीजनं प्रमान करवुं.
- ५ उवट्टणविहं—पीठी विगेरेवुं प्रमाण करवुं.
- ६ मंजणविहं—नहावा अथवा अंधोल करवाना पाणीनुं प्रमान करवुं.
- ७ वत्थविहं—ओडवा पहरवाना वस्त्रनी गणत्री करवी.

अथ श्री छाइस बोलरी धारणा ६१

- ८ विलेवणविहं-चंदन, केशर, आदिक तिलक करवानी वस्तुनो प्रमान करवुं.
- ९ पुष्पविहं-फूल विगेरेनुं प्रमान करवुं,
- १० आभरणविहं-घरेणां गांठां पहरवानो प्रमान करवुं.
- ११ धूपविहं . अगरबती विगेरे धुपनुं प्रमान करवुं.
- १२ पेजविहं-औषध, चाह, काफी उकाली विगेरे कावो पीवानुं अनुमान करवुं.
- १३ भरखणविहं-सूखडी पकान मिठाई विगेरेनुं प्रमान करवुं,
- १४ ऊदनविहं-लासा धान्य (गहूं, जवार, बाजरी आदि) नुं प्रमान करवुं.
- १५ सूपविहं-कटोल धान्य (चना, तूकर,

उडद आदि) नुं प्रमान करवुं.

१६ विगयविहं--दुध, दही, घी, गोल,
तेल विगेरेनुं प्रमान करवुं.

१७ साकविहं--लीलां शाक भाजी विगेरेनुं
प्रमान करवुं.

१८ माहूरविहं--वेल, फल तोरु ककडी
आदिनो प्रमान करवुं.

१९ जमणविहं--जमवानुं भोजन; सूकाशाक
विगेरेनुं प्रमान करवुं.

२० पाणीविहं--पीवा तथा नहावा, धोवाना
पाणीनुं प्रमान करवुं.

२१ मुखवासविहं--सोपारी, लविंग, इलायची
विगेरेनुं प्रमान करवुं.

२२ वाहनविहं--गाडी, घोडा, रथ, हाथी,

नाव, वहाण विगेरेनुं प्रमान करवुं.

२३ वाहानिविहं—पगे पहेरवाना पगरखां
मोजा, चप्पल विगेरेनी गणत्री करवी.

२४ सयणविहं—पाट, पाटला, बाजोट,
सूवानी सेज्या विगेरेनी गणत्री करवी

२५ सचित्तविहं—सचित्त चीज (सजीव
वस्तु) खावानुं प्रमान करवुं.

२६ दव्वविहं—जे वस्तु मुखमां जूदा
स्वादने अर्थे नांखवामां आवे तेनुं
प्रमान करवुं.

अथ श्री दरियावरी गच्छाधिपातिमहान्पूज्य.

श्री धर्मसिंहजी मुनि विरचित्

शिखामणना (२८) अठाविस बोल प्रारंभ.

६४ जैन प्रातःस्मरण

- १ पहले बोले जेनी श्रद्धा शुद्ध होय,
तेनो उपदेश सांभलवो.
- ४ बजि बोले जे जे व्रत पच्चख्खाण कीधा
होए तेनो निर्वाह करवो एटले बरोबर
शुद्ध रीते पालवां;पण दोष लगाडवो नही.
- ३ त्रिजे बोले-दुर्जन मित्रथी काम जोइने
पाडवुं; नहिं तो पाछलथी अवश्य
पस्ताववुं पडे.
- ४ चोथे बोले जे माणस लटपट करतो
आवे, तेनी साथे एकदम वगर विचार्युं
मली जवुं नही. अर्थात् ते माणसनी
परीक्षा करीनेज तेथी मित्राइ करवी.
- ४ पांचमे बोले जे घरमां एकली स्त्री,

अथवा एकलौ पुरुष होय, ते घरमां
एकदम बाइने पेसवुं नही, कदापि
अजाणे पेठा हो, तो ऊभा रेहनुं नहौं.
अर्थात् तरत पाछा बलवुं, कारणके,
सामाने संदेह पडे माटे.

६ छेइ बोले-कोइ रूडो अथवा वालेशरी
भिन्न, जो शिखामण दे, तो प्रमाण
करी मानवी.

७ सातमे बोले-जेना बोलवामां ढंग धडो
न होय, तेनी साथे मली जंवु नही.
अर्थात् जे पुरुषो बोल्युं पालता होय
तेमनोज परिचय करवो.

८ आठमे बोले-एक समकित अने बजि
शीयल तेने दृढ करी राखीए; अर्थात्

સમક્ષિત અને શીયલમાં દોષ નહિ
લગાવતાં શુદ્ધ રીતે પાલવું.

૯ નવમે બોલે--વિકલ માનસથી પ્રીતિ
ન કરીએ. અર્થાત્ કુશિલ્યાની સંગત
કરીએ નહી, તેમ છતાં કરે તો અવશ્ય
ખામી લાગે; ઇટલુંજ નહિ પરંતુ
આવરુ ઇજ્જત પણ ઘટે.

૧૦ દશમે બોલે-આપણા વાલેશરીને, તથા રૂઢા
મિત્રને દગો ન દેઈએ. પરંતુ પ્રેમ વધારીએ.

૧૧ અગિયારમે બોલે કુસંગીની સંગત ન
કરીએ. જો કરીએ તો આપણી
પરતીત ઘટે.

૧૨ બારમે બોલે-પોતાના બડેરામા ભૂલ
ચૂક પડી હોય, તો વારંવાર સમારીયે

नही, कारणके आपणार्थी मोटाछे माटे.

१३ तेरमे बोले अणविवेकी, अणसमजुने
धर्मनी शिखामण देता रहीये. जो
अकल आवे, अथवा न आवे, पण
उपदेश तो देताज रहीए.

१४ चौदमे बोले-पोताना वडेरानो विनय
करीए. कदापि वडेरा घणुं करी माने,
अर्थात् वडेरा ना कहे, तो पण विनय
न मुकीए.

१५ पंदरमे बोले--दोल (दुःख) सोल
(सुख) खमीए, तथा रूडा, कुलनी
अने खरा धर्मनी मर्यादा न मुकीए.

१६ सोलमे बोले--पोताना गुण पोताना,
मोढे श्री प्रकाशीए, नहीं, तेम छत

६८ जैन प्रातःस्मरण

प्रकाशीए तो अवश्य हलकाइ पणु
देखाय.

१७ सतरमे बोले-कोइने मोढे दूभाए नहीं,
अर्थात् कोइने मोढे खोटुं मनावीए,
नहीं. परंतु कामतो जोइनेज पाडीए.

१८ अठारमे बोले-कोइपण माणसना पुंठे
अवरणवाद न बोलीए. कारणके, तेमांथी
अवगुण निपजे ते माटे.

१९ उंगणीशमे बोले--नख्खर (मूर्ख)
माणसने उदेरीने शिखामण देइए नहीं.
कारण के, जो कदी अवली प्रगमे,
तो उलटी आपणीज खोट काढे.

२० वीशमे बोले-एक शियल अने बीजुं
समकित , ए बने सारी रीते यत्न

करी राखीए. तेना चलावनार घणा मले, तोपण चालीए नहीं. कोनी पेठे ? तो के, राजिमती, महासती, तथा द्रोपती सतीनी पेठे.

२१ एकवीशमे बोले—खल (मूर्ख) माणसने छेडीए नहीं. जो छेडीए तो जरूर पूठे अवर्णावाद बोले.

२२ बावीशमे बोले—ज्यां वे जण छानी बात करता होय. त्यां उभा रहीए नहीं कारण के, ते बातज्यारे बहार पड़े, त्यारे खरा नखरी करवी पड़े. एठले शाहेदी पूरवी पड़े माटे.

२३ तेवीशमे बोले—पोताना मननी बात कोई जेवा तेवा माणसने मोढे करीए नहीं. जो करीए तो जरूर पाछल

પશ્ચાતાપ થાય.

૨૪ ચોવીશમે બોલે-કદાપિ રીસ (ગુસ્સો અથવા ક્રોધ) ચઢ્યો હોય, તો જેમ તેમ બોલીએ નહીં. અર્થાત્ દમ છેચીને રહીએ. નહિ તો પછી પસ્તાવવું પડે.

૨૫ પચ્ચીશમે બોલે--વ્યવહાર સાચવવો અને નિશ્ચય ઉપર ભાવ રાખવો. જે નિશ્ચય છે, તે સોનાની મઝોર છે, અને જે વ્યવહાર છે તે ઉદ્યમ છે.

૨૬ છઞ્ચીશમે બોલે--પોતાના વડેરાથી બાકલી (સામી) ન બાંધીએ. જો કદાપિ તેડું તાળી ફાળે, તો આપણે ઢીલું મૂકવું. પરંતુ સામા થવું નહીં.

૨૭ સત્તાવીશમે બોલે-સસારનાં કામ કોઈ

દિવસ પૂરાં થયાં નથી, થવાનાં
નથી અને થશે પણ નહીં; માટે પોતાના
ધર્મકૃત્યની બે ઘડી કાઢી લેવી.
અર્થાત્--છેવટે દિવસની સાઠ ઘડિ
માંથી બે ઘડિ પણ ધર્મધ્યાન કરવું.

૨૮ આઠાવીશમે બોલે--આગલ પાછલ
પરીક્ષા કરીને જે કામ કરીએ. તો
તે કામ શીઘ્ર પાર પડે. અને ચ્યાર
લોકમાં ચતુર કહેવાઈએ અને પંચમાં
પુછાઈએ.

॥ इतिश्री दरियापरी गच्छधिपति
महान्पूज्य श्री धर्मसिंह मुनि विरचित
शिखामणाना अठावशि बोल समाप्तम् ॥

આ ઉપર લખેલા શિખામણાના ૨૮
અઠાવીશ બોલ જે ભવીજીવોં તહત્તિ

કરી માનશે, અને તે પ્રમાણે વર્તીશે, તે
આ ભવ અને પરભવમાં સુખી થશે.

અથ શ્રી ચત્તારી મંગલ

॥ ચત્તારી મંગલં, અરિહંતા મંગલં, સિદ્ધા
મંગલં, સાહુ મંગલં, કેવલી પન્નત્તો ધમ્મો
મંગલં ॥ ૧ ॥ ચત્તારી લોગુત્તમા, અરિહંતા
લોગુત્તમા, સિદ્ધ લોગુત્તમા, સાહુ લોગુત્તમા,
કેવલી પન્નતો ધમ્મો લોગુત્તમા ॥ ૨ ॥
ચત્તારી સરણ પવજ્જામિ, અરિહંતા સરણં
પવજ્જામિ, સિદ્ધા સરણં પવજ્જામિ, સાહુ સરણં
પવજ્જામિ, કેવલી પન્નત્તો ધમ્મો સરણં પવજ્જામિ
શ્રીં અરિહંતજીનું શરણ, સિદ્ધજીનું શરણ.
સાધુજીનું શરણ, કેવલી પ્રરુપ્યા ધર્મનું શરણ.

सोल सतीयोना नामनी सझाय ७३

(दोहा) ए चार शरणां करे नर
जेह, भव सायरमां न बूडे तेह; सकल
कर्मनो आणे अंत, मोक्ष तणां सुख लहे
अनंत ॥ १ ॥ भाव धरीने जे गुण गाय,
ते जीव तरीने मुगते जाय; संसारमां
शरणां चार, अवरं शरणुं नहि कोय; जे
नर नारी आदरे, तेने अक्षय अविचल
पद होय ॥ २ ॥ अंगुठे अमृत वसे
लाब्धि तणां भंडार; जय गुरु गौतम समरिये
मन वांछीत फल दातार ॥ ३ ॥

सोल सतीयोना नामनी सझाय,

॥ आदिनाथ आदे जिनवर वंदी, सफल
मनोरथ कीजीए ए; प्रभाते ऊठी मंगलिक
कामे, सोले सतीनां नाम लीजीए ए

॥१॥ बाल कुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी
 भरतनी बेनडी ए; घट घट व्यापक अक्षर
 रूपे, सोल सतीमां जे बडी ए ॥२॥ बाहु
 बल भगिनी सतिय शिरोमणी सुंदरी नामे
 रुपम सुता ए; अंक स्वरूपी त्रिभुवन मांहे,
 जेह अनुपम गुण जूता ए ॥३॥ चंदनबाला
 बालपणेथी, शियलवंती शुद्ध श्राविका ए;
 अडदना बाकुला वीर प्रतिलाभ्या, केवल
 लही व्रत भाविका ए ॥४॥ उग्रसेन धूया
 धारणी नंदनी, राजिमती नेमिवल्लभाए:
 जोवन वेसे कामने जीत्यो, संजम लेइ देव
 दुल्लभा ए ॥५॥ पंच भरतारी पांडव नारी
 द्रौपदी शील वखाणीए ए; एकसो आठे
 चीर पुराणां, शियल महिमा तस जाणीए

सोल सतीयोना नामनी सझाय ७५

ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपती नारी निरूपम,
कौशल्या कुल चंद्रिकाए; शियल सद्गुणी
राम जनेता, पुण्यतणी प्रनालीका ए
॥ ७ ॥ कौशंबीक ठामे संतानीक नामे,
राज्य करे रंग राजीयो ए, तस घरणी
मृगावती सती, सुर भुवने जश गाजीयो
ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शियेल न
काची, राची नही विषया रसे ए; मुखडुं
जोता पाप पलाए, नाम लेतां मन उल्लेसे
ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामनी,
जनक सूता सीता सती ए; जग सह
जाणे धीज करतां अनल शीतल थयो
शियलथीए ॥ १० ॥ काचे तांतणे
चारणी बांधी, कूवा थकी जल काढीयुं

ए; कलंक उतारवा सतिय सुभद्रा, चंपा
 वार उघाडीयो ए ॥ ११ ॥ सुर नर
 वंदित शियल अखंडित, शिवा शिवपद
 गामनी ए; जेहने नामे निर्मल थइए,
 बलिहारी तस नामनी ए; ॥ १२ ॥
 हस्तिनागपूरे पांडुरायनी, कुंता नामे
 कामनी ए; पांडव माता दशे दसारनी,
 बहेन पातिवृत्ता पद्मनी ए ॥ १३ ॥
 शिलवती नामे शिलयत्रत धारिणी, त्रिविधे
 तेहने वंदीए ए; नाम जपतां पातक जाए
 दर्शने दुरित निकंदीए ए ॥ १४ ॥ निषिधा
 नगरी नलह नरिंदनी, दमयंती तस
 गेहिनीए; संकट पडतां शियलज राख्युं
 त्रिभुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग
 अतीता जग जन पुजीता, पुष्पचूला ने
 प्रभावती ए; विश्व विख्याता कामित दाता,

लघु. साधुवंदनानी सझाय ७७

सोलमी सती पदमावती ए; वीरे भांखी
शाखे साखी उदय रतन भांखे मुदा ए;
वहाणुं वहतां जे नर भणशे, ते लहेशे सुख
संपदाए ॥१७॥

श्री लघु साधुवंदनानी सझाय.

॥साधुजीने वंदणा नित नित कीजे,
प्रह उगमते सूर रे प्राणी; निच गतिमां ते
नवि जावे, पामे रिद्धि भरपूर रे प्राणी
॥ साण १॥ मोटां ते पंच महाव्रत पाले,
छकायरा प्रतिपाल रे प्राणी; भ्रमर भिक्षा
मुनि सूजती लेवे, दोष बेयालिश टाल
रे प्राणी ॥सा०२॥ रिद्धि संपदा मुनि
कारमी जाणे, दीधि संसारने पूंढ रे प्राणी

ऐसा पुरपारी बंदगी करतां, ओठ करम
 जावे रे तूट प्राणी ॥ साण ६ ॥ एक एक
 मुनिवर रसना त्यागी, एकेक ज्ञान भंडार
 रे प्राणी; एक एक मुनिवर वैयावचिया वैरागी
 एना गुणनो नावे पार रे प्राणी ॥ साण ४ ॥
 गुण सत्ताविस करीयने दीपे, जीत्या पारसिह
 बावसि रे प्राणी; वावन तो अनाचारज
 टाले, तेने नमावुं महारो शशि रे प्राणी ॥ साण
 ५ ॥ जहा समान ते संत मुनिश्वर, भव्य
 जीव बेठे आयेरे प्राणी; पर उवगारी मुनि-
 दाम न मागे, देवे ते मुगती पहाँचायेर प्राणी
 ॥ साण ६ ॥ ए शरणे प्राणी साता रे पावे,
 पावे ते लील विलास रे प्राणी; जन्म जरा
 अने मरण मिटावे, नावे फरी गर्भावास रे

श्री बडो-साधुवंदना प्रारंभ ७९

प्राणी ॥ साण ७ ॥ एक वचन ए
सतगुरु केरो, जो बेसे दीलमांय रे प्राणी,
नरक गतिमां ते नवि जावे, एम कहे
जीनराय रे प्राणी ॥ साण ८ ॥ प्रभाते
उठी सुणो उत्तम प्राणी; सुणो साधारो
बखाण रे प्राणी; ए पुरुषांरी सेवा करतां,
पावे ते अमर विमान रे प्राणी ॥ साण ९ ॥
संवत अढारने वर्ष अडत्रीसे, बुसी ते गाम
चोमास रे प्राणी; मुनि आसकरणजी एणी
परे जंपे, हुं तो उत्तम साधारो दास रे
प्राणी; साधुजीने वंदणा नित नित काजि
॥ १० ॥ इति समाप्तम्.

॥ श्री बडो-साधुवंदना प्रारंभ ॥

॥ नमु अनंत चौवशी, ऋषमादिक

महावीर; आर्य क्षेत्रमां, घाली धर्मनी सीर
 ॥ १ ॥ महा अतुल्य बलि नर शूर वीर ने
 धीर; तीर्थ प्रवर्तावी, पहुँत्या भवजल तीर
 ॥ २ ॥ समिंधर प्रमुख, जघन्य ती-
 र्थकार वशि; छे अढाइद्वीपमां, जयवंता
 जगदीश ॥ ३ ॥ एकशोने शित्तेर,
 उत्कृष्ट पदे जगशि; धन्य महोटा प्रभुजी,
 जेहने नमावुं शीश ॥ ४ ॥ केवली दोय
 कोडी, उत्कृष्टा नव कोड; मुनि दोय
 सहस्र कोडी, उत्कृष्टा नव सहस्र कोड
 ॥ ५ ॥ विचरे विदेहे में, महोटा तपस्वी
 घोर; भावे करी वंदु, टाले भवनी खोड
 ॥ ६ ॥ चोवीशे जिनना, सघला ए
 गण धार; चउदसें ने बावन, ते प्रणमुं
 सुखकार ॥ ७ ॥ जिनशासन नायक, धन्य श्री

श्री बंडी-साधुवंदना प्रारंभ ८१

वीर जिणंद; गौतमादिक गणधर,
वर्त्ताव्यो आणंद ॥ ८ ॥ श्री रिषभदेवेना,
भरतादिक सो पूत; वैराग्य मन आर्णा,
संजम लियो अद्भूत ॥ ९ ॥ केवल
उपराजी, करि करणी करतूत; जिनमत
दीपात्री, सघला मोक्ष पहुंत ॥ १० ॥
श्री भरतेश्वरना, हुवा पटोधर आठ; आदित्य
जशादिक पहोंत्या शिवपूर वाट ॥ ११ ॥
श्री जिन अंतरना, हुवा पाट असंख्य;
मुनि मुक्ति पहोंत्या, टाली कर्मनो बंक
॥ १२ ॥ धन्य कपिल मुनिवर, नमि
नमुं अणगार । जेणे ततक्षण त्यागो,
सहस्र रमणी परिवार ॥ १३ ॥ मुनि
हरिकेशीबल, चित्त मुनिश्वर सार; शुद्ध
११

संजम पाली, पाम्या भवनो पार ॥ १४ ॥
 वली इखुकार राजा, घेर कमलावती नार;
 भगु ने जसा, तेहना दोय कुमार ॥ १५ ॥
 छये छति रिद्धि छांडीने, लीधो संजम भार ।
 इण अल्प कालमां, पाम्या मोक्ष द्वार ॥ १६ ॥
 वली संजती राजा, हरण अहिडे जाय;
 मुनिवर गर्दभाली, आण्यो मारंग ठाय ॥ १७ ॥
 चारित्र लेइने, भेअ्या गुरुना पाय । क्षत्रिराज
 ऋषीस्वर, चर्चा करी चित्त लाय ॥ १८ ॥
 वली दशे चक्रवर्ती, राज्य रमणी ऋद्धि
 छोड; दश मुक्ति पहेत्त्या, कुलने शोभा चहोड
 ॥ १९ ॥ इण अवसर्पिणीमां, आठ राम
 गया मोक्ष; बलभद्र, मुनिश्वर, गया पंचमे
 देवलोका ॥ २० ॥ दशशारणभद्र राजा, वीर बांधा

श्री बडी-साधुवंदना प्रारंभ ८३

धरि मान; पछे इंद्र हठायो, दियो छकायने
अभयदान ॥ २१ ॥ करकैंडु प्रमुख, च्यार
प्रत्येक बोध; मुनि मुक्ति पहुँच्या, जीत्या
कर्म महा जोध ॥ २२ ॥ धन्य महोटा मुनि-
वर, मृगापुत्र जगीश; मुनिवर आनाथी,
जीत्या राग ने रीस ॥ २३ ॥ बलि समुद्रपाल
मुनि. राजिमति रहनेम; केशीने गौतम
पाम्या, शिवपूर क्षेम ॥ २४ ॥ धन्य
विजयघोष मुनि, जयघोष बली जाण; श्री
गर्गाचार्य पहुँच्या छे निर्वाण ॥ २५ ॥
श्री उत्तराध्यायनमां, जिनवरे कर्या बखाण;
शुद्ध मनसैं ध्यावो, मनमें धिरज आण
॥ २६ ॥ बली खंधक सन्याशी, राख्यो
गौतम स्नेह, महावीर समीपे, पंच महाव्रत
लेह ॥ २७ ॥ तप कठीण करीने, झोशी

आपणी देह; गया अच्युत देवलोके, चवी
लेशे भव छेह ॥ २८ ॥ वली ऋषभदत्त
मुनि, शेठ सुंदरीन सार; शिवराज
ऋषीश्वर, धन्य गांगेय अणगार ॥ २९ ॥

शुद्ध संजम पाली, पाम्या केवल सार; ए
च्यारे मुनिवर, पहुँत्या मोक्ष मझार ॥ ३० ॥

भगवंतनी माता, धन्य धन्य सती देवानंदा;
वली सती जयंति, छोडी दिया घर फंद
॥ ३१ ॥ सती मुक्ति पहुँत्या, वली ते

वीरनी नंद; महासती सुदर्शना, घणी
सतियोना वृंद ॥ ३२ ॥ वली कार्तिक

शेठे, पडिमावही शुरवीर; जम्हो महोरा
ऊपर, तापस बलती खीर ॥ ३३ ॥ पछी

चारित्र लीधुं, मंत्री एक सहस्र आठ

श्री बडी-साधुवंदना प्रारंभ ८५

भीर; मरी हुवा शक्रेन्द्र, चयी लेशे भव
तीर ॥ ३४ ॥ बलि राय उदायन, दियो
भाणेज ने राज; पछी चारित्र लेइने, सार्या
आतम काज ॥ ६५ ॥ गंगदत्त मुनि आणंद
तरण तारण रीजीहाज; कुशल मुनि रूहो,
दियो घणाने साज ॥ ३६ ॥ धन्य सुनक्षत्र
मुनिवर, सर्वानुभूति अणगार; आराधिक
हुइने, गया देवलोक मझार ॥ ३७ ॥
चवि मुक्ति जाशे, बलि सिंह मुनिश्वर
सार; विजा पण मुनिश्वर, भगवतीमां
अधिकार ॥ ३८ ॥ श्रेणिकना बेटा,
महोटा मुनिवर मेघ; तजी आठ अंतेउरी,
आण्यो मन संवेग ॥ ३९ ॥ विरपें व्रत
लेइने, बांधी तपनी तेग, गया विजय
विमाने, चवि लेशे शिव वेगे ॥ ४० ॥

धन्य थावर्चा पुत्र, तजी बत्रिसे नार;
 तेनी साथे निकल्या, पुरुष एक हजार
 ॥ ४१ ॥ सुखदेव सन्यासी, एक सहस्र
 शिष्य लार; पंचशयशुं सेलक, लिधौ सं-
 यम भार ॥ ४२ ॥ सर्व सहस्र आढाई,
 घणा जीवो ने तार; पुंडरगिरि ऊपर, कियो
 पादोपगमन संथार ॥ ४३ ॥ आराधिक
 हुइने, किधो खेवो पार॥हूवां महोटा मुनिवर,
 नाम लिया निस्तार ॥ ४४ ॥ धन्य
 जिनपाल मुनिवर, दोय धनवा साध; गया
 प्रथम देवलोके, मोक्ष जाशे आराध ॥ ४५ ॥
 श्री मल्लिनाथ छ मित्र, महाबल प्रमुख
 मुनिराय; सर्वे मुक्ति सिधाव्या, महोटी
 पदवी पाय ॥ ४६ ॥ वाले जितशत्रु
 राजा सुबुद्धि नामे प्रधान; पोत

श्री बडी-साधुवंदना प्रारंभ ८७

चारित्र लेइने, पाम्या मोक्ष निधान ॥४७॥
धन्य तेतलि मुनिवर, दियो छकाय अभेदान
पोटिला प्रतिबोध्या, पाम्या केवलज्ञान ॥
४८॥ धन्य पांचे पांडव, तजी द्रौपदी नार;
स्थिवरनी पासे लिधो संजम भार ॥४९॥
श्री नेमि वंदननो, एहवो अभिग्रह कीध;
मास मासखमण तप शेंत्रुजय जइ सिद्ध
॥५०॥ धर्मघोष तणा शिष्य, धर्मरूचि
अणगार; किडियोनी करुणा, आणि दया
रस सार ॥५१॥ कडुवा तुंबानो, किंधो
सघलो अहार, सर्वार्थसिद्ध पहोंत्या, चविं
लेशे भव पार ॥५२॥ वली पुंडरिक राजा,
कुंडरिक डगियो जाण; पोते चारित्र लइने,
न घाली धर्ममां हाण ॥ ५३ ॥ सर्वार्थसिद्ध

पहोंत्या, चवि लेशे निर्वाण; श्री ज्ञातासूत्रमां
 जिनवरे कर्या वग्वाण ॥ ५४ ॥ गौतमादिक
 कुमर, सगा आठारे भ्रात; सर्व अंधकविष्णु
 सुत, धारणी ज्यारी मात ॥ ५५ ॥ तजी
 आठ अंतेउरी, काढी दीक्षानी बात, चारित्र
 लेइने, कीधो मुक्तिनो साथ ॥ ५६ ॥ श्री
 अनेकसेनादिक, छये सहोदर भाय;
 वसुदेवेना नंदन, देवकी ज्यारी माय
 ॥ ५७ ॥ भदिल पुर नगरी, नाग
 गाहावइ जाण, सुलसा घेर वधिया,
 सांभाली नेमिनी वाण ॥ ५८ ॥ तजी बत्रीस
 बत्रीस अंतेउरी, निकलीया छटकाय ॥ नल
 कुबेर समाणा, भेट्या श्री नेमिना पाय
 ॥ ५९ ॥ करी छट छट पारणां, मनमे
 वैराग्य लाय; एक मास संथारे, मुक्ति

श्रीं वडी-साधुवंदना प्रारंभ ८९

बिराज्या जाय ॥ ६० ॥ वली दारुक
सारण, सुमुख दुमुख मुनिराय,
कुमर अनादृष्टि, गया मुक्तिगढ मांय
॥ ६१ ॥ वसुदेवना नंदन, धन्य धन्य
गजसुकुमाल; रूपे अति सुंदर, कलावंत
वय बाल ॥ ६२ ॥ श्री नेमि समीपे,
छोड्यो मोह जंजाल; भिक्षुनी पडिमा,
गया मसाण महाकाल ॥ ६३ ॥ देखी
सोमील कोप्यो, मस्तके, बांधी पाल;
खेरना खीरा, शीर ठविया असराल ॥ ६४ ॥
मुनि नजर न खंडी, मेटी मननी झाल;
परीसह सहीने, मुक्ति गया तत्काल
॥ ६५ ॥ धन्य जाली मयाली, उवया-
लादिक साध; सांबने प्रद्युम्न, अनिरुढ
साधु अगाध; ॥ ६६ ॥ वली सच्चनेमी
१२

दृढनेमी, करणी कीधी बाध; दशे मुक्ति
 पहुँत्या, जिनवर वचन आराध ॥ ६७ ॥
 धन्य अर्जुनमाली, कर्यो कदाग्रह दूर; वीर पै
 व्रत लेइने, सत्यवादी हुवा शूर ॥ ६८ ॥
 करी छट छट पारणां, क्षमा करी भरपूर,
 छ मासा मांही, कर्म कियां चकचूर
 ॥ ६९ ॥ कुमार अइमुत्ते, दीठा गौतमस्वामी;
 सुणी वीरनी वाणी, कीधो उत्तम काम
 ॥ ७० ॥ चारित्र लेइने पहुँत्या शिवपू
 ठाम, धुर आदि मकाई, अंत अलक्ष
 मुनि नाम ॥ ७१ ॥ बली कृष्णरायनी,
 अग्रमहीषी आठ; पुत्र बहु दोये, संच्या
 पुण्यना ठाठ ॥ ७२ ॥ यादव कुल
 सतियां, टाली दुःख उचाट; पहुँत्या

श्री बडी-साधुवन्दना प्रारंभ ९१

शिवपुरमें, ए छे सूत्रनो पाठ ॥७३॥ श्रेणिकनी
राणी, कालीयादिक जाण; दशे दश पुत्र
वियोगे, सांभली वरिनी वाण ॥७४॥
चंदनबालापें, संजम लेइ हुवां जाण; तप
करी देह शोशी पहोंत्या छे निर्वाण ॥७५॥
नंदादिक तेरे, श्रेणिक नृपनी नार, सघली
चंदन बालापें, लीधो संजम भार ॥७६॥
एकमास संथारे पहोंत्या मुक्ति मोझार, ए
नेवुं जणानो, अंतगडमां अधिकार ॥७७॥
श्रेणिकना बेटा जालियादिक तेवीस, विरपे
व्रत लेइने, पाल्यो विश्वावीस ॥७८॥ तप
कठीन करीने, पूरी मन जगीश; देवलाके
पहोंत्या, मोक्ष जाशे तजी रीस ॥७९॥
काकादिनो धनो तजी बत्तीसे नार, महावीर

समीपे, लीधो संजमभार ॥८०॥ करी छट
 छट पारणां; अयंबिल उच्छित अहार; श्री
 वीर वखाण्या, धन्य धन्नो अणगार ॥८१॥
 एक मास संथारे सर्वार्थसिद्ध पहोंत; महावि-
 देह क्षेत्रमां करशे भवनो अंत ॥८२॥
 धन्नानी रोते, हुवा नवेइ संत; श्री अनुत्तरोव-
 वाइमां, भांखी गया भगवंत ॥८३॥ सुबाहु
 प्रमुख, पांच पांचसे नार; तजी वीरपें लीधां
 पंच महाव्रत सार ॥८४॥ चरित्र लेइने
 पाल्यो निरातिचार; देवलोके पहोंत्या, सुख-
 विपाके अधिकार ॥८५॥ श्रेणिकना पौत्रा,
 पौमादिक हुवा दस; वीरपें व्रत लेइने,
 काढ्यो देहनो कस ॥८६॥ संयम आराधी
 देवलोकमां जइ वश, महाविदेह क्षेत्रमां,

श्री बड्डी-साधुवंदना प्रारंभ ९३

मोक्ष जाशे लेइ जश ॥८७॥ बलभद्रना
नंदन, निषढा दिक हुवा बार; तजी पचाश
अंतउरी, त्याग दियो संसार ॥८८॥ सह
नेमि समीपें च्यार महाव्रत लीध; सर्वार्थसिद्ध
पहोंत्या, होशे विदेहे सिद्ध ॥८९॥ धन्नो
ने शालिभद्र, मुनिश्चरोनी जोड; नारीनां
बंधन, ततक्षण नांख्यां तोड ॥९०॥ घर
कुंटुब कबीलो, धन कंचननी कोड; मास
मासखमण तप, टालशे भवनी खोड ॥९१॥
श्री सुधर्मस्वामीना शिष्य, धन्य धन्य
जंबुस्वाम; तजी आठ अंतेउरी मात पित,
धन धाम ॥९२॥ प्रभवादिक तारी, पहोंत्या
शिवपूर ठाम; सूत्र प्रवर्तावी, जगमां राख्यु
नाम ॥९३॥ धन्य ढंढण मुनिवर, कृष्णरायना

नंद, शुद्धअभिग्रह पालि, टाली दियोभव
 फंद ॥ ९४ ॥ वली खंधक ऋषिनी, देह
 उतारी खाल; परीसह सहने; भव फेरा
 दिया टाल ॥ ९५ ॥ वली खंधक ऋषिना,
 हुवा पांचसे शिष्य, घाणीमां पील्या, मुक्ति
 गया तजी रीस ॥ ९६ ॥ संभूतिविजय
 शिष्य, भद्रबाहू मुनिराय; चउदपुर्वधारी
 चंद्रगुप्त आण्यो ठाय ॥ ९७ ॥ वली
 आर्द्रकुमार मुनि, स्थूलीभद्र नंदिषेण॥अरणिक
 अइमुत्तो, मुनिश्वरोनी श्रेण ॥ ९८ ॥
 चोर्वासे जिनना मुनिवर, संख्या अठावीस
 लाख; उपर सहस्र अडताळीस, सूत्र परम्परा
 भाख ॥ ९९ ॥ कोइ उत्तम बाँचो, मोढे
 जयणा राख; उघाडे मुख बोल्यां, पाप लागे

श्री बडी-साधुवदना प्रारंभ ९५

इम भांख ॥ १०० ॥ धन्य मरुदेवी माता,
ध्यायुं निर्मल ध्यान; गज होदे पायुं,
निर्मल केवलज्ञान ॥ १०१ ॥ धन्य आदे-
श्वरनी पुत्री, ब्राह्मी सुंदरी दोय; चारित्र
लेइने, मुक्ति गयां सिद्ध होय ॥ १०२ ॥
चोवीसे जिननी, बडी शिष्यणी चोवीस;
सती मुक्ति पहुँच्यां, पूरी मन जगीश
॥ १०३ ॥ चोवीसे जिननी, सर्व साधवी
सार; अडतालीसलाख ने, आठसैं शित्तर-
हजार ॥ १०४ ॥ चेडानी पुत्री, राखी
धर्मशु प्रीत; राजिमति विजया, मृगावती
सुत्रिनित ॥ १०५ ॥ पद्मावती मयणरेहा,
द्रौपदी दमयंती सीत; इत्यादिक सतीयों,
गइ जन्मारो जीत ॥ १०६ ॥ चोवीसे

जिनना साधु साधवी सार; गया मोक्ष
 देवलोके, हृदये राखो धार ॥ १०७ ॥
 इण अढाइद्वीपमां, घरडा तपस्वी वाल;
 शुद्ध पंच महाव्रत धारी, नमो नमो तीन
 काल ॥ १०८ ॥ ए जतियो सतियोनां,
 लीजे नित्य प्रते नाम; शुद्ध मन ध्यावो,
 एहज तरवानो ठाम ॥ १०९ ॥ ए
 जतियों सतियों शुं, राखो उज्ज्वल भाव;
 इम कहे ऋषि जेमलजी, एहज तरवानो
 दाव ॥ ११० ॥ संवत अठारने, वरस
 सातो शिरदार; गढ जालोरमां, एह कह्यो
 अधिकार ॥ १११ ॥ इति श्री बडी साधु
 वंदना समाप्तम् ॥



॥ जाणवा लायक छुटक बोल ॥

श्री मोक्षगति पहुँचयाना बोलनी विगत.
 पहेलेबोले—सिद्ध भंगवतजीरो लीजीए नाम.
 बीजे बोले—सांभलीए साधाजीरो व्याख्यान.
 त्रीजे बोले—धरीए शुभ ध्यान
 चौथे बोले—दर्जाए शुद्धभावथी दान
 पांचमे बोले—पहेरीए शियल.
 छठ्ठ बोले—उढीए लज्जा.
 सातमे बोले—मारीए मन.
 आठमे बोले—खाइए गम.
 नवमे बोले—दमीए देहने.
 दशमे बोले—प्रेमरस पीजीए.
 एणीरीते वर्तिए, तो सिद्ध गतिमां पहुँचीए.

॥ अथ स्तवन ॥

॥धम्मो मंगल महिमां निलो, धर्म समो
 नहीं कोय; धर्मथकी नमे देवतां, धर्म
 शिवसुख होय ॥ धण १ ॥ जीवदया नित्य
 पालीये, संयम सतरे प्रकार; बारा भेदे तप
 तपे, धर्मतणो ए सार ॥धण २॥ जिम
 तरुवरने फूलडे, भमरो रस लेवा जाय; तिम
 संतोषे मुनि आतमा, फूलने पीडा नथाय ॥
 धण ३॥ इणविध जावे गौचरी, बहरे सूजतो
 अहार; उंच नीच मध्यम कुले, धन्य धन्य
 ते अणगार ॥ धण ४ ॥ मुनिवर मधुकर
 सम कहा, नहीं तृष्णा नहीं लोभ; लाध्यो
 भाडो दीए देहने, अणलाध्यां संतोष ॥ धण
 ५ ॥ अध्ययन पहेले दुम्मपुष्पिए, सखरा

अर्थ विचार; पुण्यकलश शिष्य जेतसी धर्मे
जय जयकार ॥ धण ६ ॥ इति समाप्तम्. ॥

॥अथ सम्मत्त आश्रयी पदप्रारंभ

॥ शुद्ध सम्यक्त व्रत रस राचो, जैन
येन विना केन सब काचो रे ॥ शुण १ ॥
सच्चा देव गुरुं धर्म परख जाचो, खोटो
पक्ष सो मत खांचो रे ॥ शुण १ ॥ नित्य
प्रते जैन शास्त्रकुं वांचो, वली सुणके
लगावो तन आंचो रे ॥ शुण ३ ॥ इणशुं
सीवजि कालको डाचो, छुटे अनंत भव
सरवा साचोरे ॥ शुण ४ ॥ इण बिना चार
गतिमें नाचो, नही छुटो कर्मको लाचोरे
॥ शुण ५ ॥ तिलोक रिख कहे समकित

माचो, कुमति लता जड टांचोरे ॥ ६ ॥

॥अथ चरित्र आश्रयी पद प्रारंभ

॥ पालो पालोरे संजमकी कीरिया,
जिणथी जीव अनंतहि तरिया रे ॥ पाण १ ॥
पंच महाव्रत भावे उच्चरियां, रहो पाप कर्मसुं
टरिया रे ॥ २ ॥ पंच आश्रव द्वारकुं
बुरियां, राग द्वेष शत्रु सब चूरियां रे ॥ पाण
॥३॥ जो संजम करणी थकी डरिया, सो तो
चार गतिमांहे फरिया रें ॥ पाण ॥४॥ एसो
जाणके संजम आदरिया, सो तो अनंत गुणका
हे दरिया रे ॥ पाण ॥ ५ ॥ तिलो करिख कहे
परहित धरिया, पुण्यजोगसुं मिलि एह
बिरियां रे ॥ पाण ॥ ६ ॥

॥ अथ तप आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ तुम तपस्या करो भव प्राणी, शम्
दम उपशम चित्त आणी रे ॥ तु० ॥ १ ॥
कर्म धान्य पिसणकुं ए घाणी, मोह अ-
टवीके आग लगाणी रे ॥ तु ० ॥ २ ॥
अहंकर पर्वत दुःखखाणी, तपस्या सो वज्र
समाणी रे ॥ तु ० ॥ ३ ॥ भव ताप
बुझावण पाणी, करे सकल कलेशनी हाणी
रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ तिलोक ऋषि कहे तप
सुखदाणी, जो करे सो वरे शिवराणी
रे ॥ तु० ॥ ५ ॥

॥ अथ क्रोध आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मेढो मेढो रे भविक जन लाली,
जिणसुं रहोगे सदाइ खुशीयाली रे ॥ मे०

॥ १ ॥ पहली देवें निज आत्मा बाली,
 पिछें दुजाने देवे प्रजाली रे ॥ मे० ॥ २ ॥
 यातो धर्म तरु छेदन वाली, जगमें रीश
 बडी हे जंजाली रे ॥ मे० ॥ ३ ॥ ऐसी
 जाणके देवणी नहिं गाली, क्षमा जाणजो
 सदा हितवाली रे ॥ मे० ॥ ४ ॥ तिलोक
 ऋषि कहे क्षमा धर्म पाली, गया शिवमंदीर
 सुविशालीरे ॥ मे० ॥ ५ ॥

॥अथ माया आश्रयी पद प्रारंभ॥

॥ मत कहो रे चतुर माया मेरी, या
 तो पुण्य जिहां लगे ठेरीरे ॥ मण ॥ १ ॥ जब
 बीत जावे पुण्यकी लहेरी, तब राखी रहेगी
 नहि तेरीरे ॥ मण ॥ २ ॥ यातो साथी
 नहिं छे किण केरी, भाग्य बिना मीले नहि

हेरीरे ॥ मण ॥ ३ ॥ चार रोजकी चांदणी
 गहेरी, छेवट रयेण अंधेरी रे ॥ मण ॥ ४
 ॥ या तो ज्युं ज्युं भेलि होवे गहेरी, त्युं त्युं
 तृष्णा वधे बहु तेरीरे ॥ मण ॥ ५ ॥
 जाणो नरक निगोदकी या शेरी, एसी
 जाणके ल्यो तृष्णा थें घेरिरे ॥ मण ॥ ६ ॥
 तिलोक ऋषि कहें उपदेश कि या भेरी, इसकी
 संग तजा शिव शेरी रे ॥ मण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ मान आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मत करो रे चतुर अभीमानां, अंत
 दावे तो परभव जानां रे ॥ मण ॥ १ ॥
 फूल फूले सो देख कुमलानां, जो बंध्या सो
 तो विखराना रे ॥ मण ॥ २ ॥ थिर नहिं
 इंद्र चंद्र रवि माना, थिर नहिं हे जगमें

राजा राणा रे ॥ मण ॥ ३ ॥ एसी समजके दिल
 नरमाना, नित गुणीजनके गुण गानां रे
 ॥ मण ॥ ४ ॥ तिलोक ऋषि कहे सुणजो
 शाणा, विनय कियासुं पद निर्वाणा रे ॥
 मण ॥ ५ ॥ इति समाप्तम्.

इति श्री जैन प्रातःस्मरण
 पुस्तक समाप्तम्.

प्रकाशक—किसनलाल बोरा
भडना, तालुके शिंदखेडें
प० खानदेश.



मुद्रक—का. लि. पंडित
समर्थ छापखाना
३/२७ धुल्लें.

